स्त्रीप्रशंसासाध्याय 74.1-15

जये धरित्र्याः पुरमेव सारं पुरे गृहं सद्मनि चैकदेशः।

तत्रापि शय्या शयने वरा स्त्री रत्नोज्ज्वा राज्यसुखस्य सारः।।१।।

राजा के लिए सम्पूर्ण पृथ्वी पर भी उसमें केवल अपनी राजधानो सार है तथा उस राजधानी में अपना घर, अपने घर में अपने रहने का स्थान, अपने रहने के स्थान में शय्या और शय्या पर रत्नों से भूषित स्त्री राज्य सुख का सार है।

रत्नानि विभूषयन्ति योपा भूष्यन्ते वनिता न रत्नकान्त्य।

चेतो वनिता हरन्त्यरत्ना नो रत्नानि विनाङ्गनाङ्गसङ्गम्।।२।।

स्त्री रत्नों को भूषित करती है, किन्तु रत्न कान्ति से स्त्री नहीं भूषित होती, क्योंकि रत्नरहित स्त्री भी चित्त को हर लेती है किन्तु स्त्री के अङ्ग सङ्ग के विना रत्न चित्त को नहीं हर सकता है।

आकारं विनिगूहतां रिपुबलं जेतुं समुत्तिष्ठतां

तत्रं चिन्तयतां कृताकृतशतव्यापारशाखाकुलम्।

मन्त्रिप्रोक्तनिषेविणां क्षितिभुजामाशङ्किनां सर्वतो

दुःखाम्भोनिधिवर्तिनां सुखलवः कान्तासमालिङ्गनम्।। 3 ।।

सुख, भय, हर्ष आदि आकार को छिपाते हुये, शत्रु की सेना को जीतने के लिये प्रयास करते हुये, किये न किये सैंकड़ों व्यापारों की शाखाओं से व्याकुल तन्त्रों को विचारते हुये, मन्त्रियों से कथित नीति का सेवन करते हुये, पुत्र आदि से भी शङ्कित रहते हुये, दुःखार्णव में निमग्न राजाओं के लिये स्त्री का आलिङ्गन मात्र थोड़ा-सा सुख है।

श्रुतं दृष्टं स्पृष्टं स्मृतमपि नृणां हादजननं

नरलं स्त्रीभ्यो ऽन्यत् क्वचिदपि कृतं लोकपतिना।

तदर्थं धर्मार्थासुतविषयसौख्यानि च ततो

गृहे लक्ष्यो मान्याः सततमबला मानविभवैः।।4।।

संसार में कहीं पर ब्रह्मा ने स्त्रियों के अतिरिक्त, ऐसा कोई रत्न नहीं बनाया, जिसके सुनने, स्पर्श करने, देखने या स्मरण करने से ही आनन्द हो। सब स्त्री के लिये धर्म और अर्थ की सेवा करते हैं। स्त्री के द्वारा पुत्र सुख तथा विषय सुख मिलता है तथा स्त्री गृह में लक्ष्मी है। अत: मान तथा विभवों के द्वारा स्त्री का आदर सदा करना चाहिये।

येऽप्यङ्गनानां प्रवदन्ति दोषान् वैराग्यमार्गेण गुंणान् विहाय।

ते दुर्जना मे मनसो वितर्कः सद्भाववाक्यानि न तानि तेषाम्।। 5 ।। जो कोई वैराग्य मार्ग के द्वारा स्त्रियों में गुणों को छोड़ कर दोषों का वर्णन करते हैं, वे दुर्जन हैं, ऐसा मेरा अनुमान है। अत: उन दुर्जनों के वचन प्रामाणिक नहीं हो सकते हैं।

प्रब्रूत सत्यं कतरोऽङ्गनानां दोषोऽस्ति यो नाचरितो मनुष्यैः।

घाष्ट्र्येन पुम्भिः प्रमदा निरस्ता गुणाधिकास्ता मनुनात्र चोक्तम्।।6।।

स्त्रियों में ऐसा कौन सा दोष है, जिसको पुरुषों ने पहले नहीं किया अर्थात् पहले पुरुषों ने सब दोष किये पश्चात् उनसे स्त्रियों ने

सीखे। पुरुषों ने अपनी धृष्टता से स्त्रियों को जीत लिया, क्योंकि पुरुषों से स्त्रियों में अधिग गुण हैं, यहाँ पर मनु ने भी कहा है।

सोमस्तासामदाच्छौचं गम्धर्वः शिक्षितां गिरम्।

अग्निश्च सर्वभक्षित्वं तस्मान्निष्कसमाः स्त्रियः।।7।।

चन्द्रमा ने पवित्रता, गन्धर्वो ने शिक्षित वचन और अग्नि सर्वभक्षित्व स्त्रियों को दिया है, इसलिये स्त्रियाँ सुवर्ण तुल्य हैं।

ब्राह्मणाः पादतो मेध्या गावो मेध्याश्च पृष्ठतः।

अजाश्वा मुखतो मेध्याः स्त्रियो मेध्यास्तु सर्वतः।। 8 ।।

ब्राह्मण पांव से, गौ पृष्ठ से और बकरा तथा घोड़ा मुख से पवित्र होता है, किन्तु स्त्री सब अङ्गों से पवित्र होती है।

स्त्रियः पवित्रमतुलं नैता दुष्यन्ति कर्हिचित्।

मासि मासि रजो ह्यासां दुष्कृतान्यपकर्षति।।9।।

स्त्रियों के समान कोई अन्य वस्तु पवित्र नहीं है, कभी भी वे दोष युक्त नहीं होती है, क्योंकि प्रत्येक मास उनका रज उनके पापों का नाश कर देता है।

जामयो यानि गेहानि शपन्त्यप्रतिपूजिताः।

तानि कृत्याहतानीव विनश्यन्ति समन्ततः।। 10।।

असम्मानित कुल स्त्रियाँ जिन गृहों को शाप देती हैं, कृत्या से हत की तरह चारों तरफ से वे गृह नष्ट हो जाते हैं।

जाया वा स्याञ्जनित्री वा सम्भवः स्वीकृतो नृणाम्।

हे कृतप्रास्तयोनिन्दा कुर्वतां वः कुतः शुभम्।।11।।

मनुष्यों की उत्पत्ति स्त्री से ही होती है अर्थात् भाता से साक्षात् और भार्या से पुत्र रूप करके उत्पत्ति होती है। इसलिये जाया हो या जनित्री (माता) हो, हे कृतघ्न! उन दोनों की निन्दा करने से तुम्हारा मङ्गल कहाँ से हो सकता है।

दम्पत्योर्युत्क्रमे दोषः समः शास्त्रे प्रतिष्ठितः

न तमवेक्षन्ते तेनात्र वरमङ्गनाः।।12।।

स्त्री पुरुष दोनों को व्युत्क्रम में (पर स्त्री गमन में पुरुष परपुरुष गमन में स्त्री को) समान दोष धर्मशास्त्र में कहा गया है। परन्तु पुरुष उस दोष को नहीं देखते तथा स्त्री देखती है। इसलिये पुरुषों से स्त्रियों श्रेष्ठ हैं।

बहिर्लोग्ना तु षण्मासान् वेष्टितः खरचर्मण।

दारातिक्रमणे भिक्षां देहीत्युक्त्वा विशुध्यति।।13।।

जो पुरुष अपनी स्त्री को छोड़कर पर स्त्री गमन करता है, वह बाहर की तरफ किये हुये रोम वाले गदहे के चमड़े से अपने शरीर को ढक कर छ: मास तक भिक्षा देहि वह कह कर भीख माँगने से शुद्ध होता है।

न शतेनापि वर्षाणामपैति मदनाशयः।

तत्राशक्त्या निवर्तन्ते नरा धैर्येण योषितः।।14।।

सौ वर्ष बीतने पर भी मनुष्य की विषय वासना नष्ट नहीं होती, किन्तु शारीरिक शक्ति कम हो जाने पर पुरुष उससे निवृत्त होता है और स्त्री धैर्य से निवृत्त होती है।

अहो धार्यमसाधूनां निन्दतामनघाः स्त्रियः।

मुष्णतामिव चौराणां तिष्ठ चौरेति जल्पताम्।।15।।

पवित्र स्त्रियों की निन्दा करते हुये दुर्जनों की धृष्ठता, चोरी करते हुये चोर का 'चोर ठहर' ऐसा कहने की तरह है।

Lecture by-Dr. Ritu Mishra

3rd SEM.

Department of Sanskrit

Shivaji College.